

1. कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती—पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

लेखक अपने बचपन के दोस्तों के बारे में बताते हैं: “हमारे आधे से अधिक साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे... जब बहुत छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ पाते। उनके कुछ शब्द सुनकर हमें हँसी भी आती थी। परंतु खेलते तो सभी एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते।” इस अंश से प्रमाणित होता है कि भाषा में भेदभाव, अलग-अलग बोली या स्थानीयता, बच्चों के आपसी व्यवहार या मित्रता के आड़े नहीं आती। खेल और भावनाएँ भाषा की दीवारों को तोड़ देती हैं, इसलिए कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती।

2. पीटी साहब की शाबाश फ़ौज के तमगों-सी क्यों लगती थी?

स्कूल के पीटी मास्टर प्रीतमचंद बहुत कड़क और अनुशासनप्रिय थे। वे अक्सर गलती करने, कतार से सिर हिलाने या अनुशासन तोड़ने पर विद्यार्थियों को डाँटते या दंडित करते थे, जिसके कारण सभी उनसे डरते थे। लेकिन जब वह स्काउट की परेड और झंडियों की रिहर्सल करवाते थे, तब गलती न करना, वर्दी में रहना, सही चलना—सबका मिलाजुला प्रदर्शन उन्हें खुश करता। यदि कोई छात्र अच्छा करता, तो वह उसकी तारीफ करते—“शाबाश!” उनके इस शाबाश कहने पर बच्चों को लगता कि जैसे फौज में बहादुर सिपाही को सम्मानित करते हैं, वैसे ही उन्हें भी सम्मान मिल गया है। बच्चों के लिए पीटी मास्टर का शाबाश फौज के तमगे (मेडल) समान गर्व का क्षण था।

3. नयी श्रेणी में, नई कापियों और पुरानी किताबों की गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो जाता था?

लेखक के लिए स्कूल में नयी कक्षा में जाना कभी उत्साह भरा नहीं रहा। नई कापियों और पुरानी किताबों से एक अजीब-सी गंध आती थी, जो उसे हमेशा उदास करती थी। इसके पीछे भावनात्मक कारण हैं—वह साधारण घर से था, नई किताबें ले पाना संभव नहीं था; शायद इसी वजह से उसे अपनी गरीबी, अभाव, और पढ़ाई की बढ़ती मुश्किलें, नए मास्टर्स की डराने वाली छवि, सब कुछ मिल-जुलकर उस उदासी का कारण बनती थी। स्कूल का अनुशासन, मार-पीट, डर और नयी ज़िम्मेदारियाँ भी नकारात्मक मनोवृत्ति को बढ़ा देते थे। कला और गंध जैसी छोटी-छोटी चीजें भी हमारी मनोभावनाओं पर गहरा असर डाल सकती हैं।

4. स्काउट परेड करते समय लेखक अपने आपको फौजी जवान क्यों समझता था?

स्काउट अभ्यास के दौरान, लेखक साफ़ वर्दी, चमकीले जूते और गले में दोरंगा रूमाल पहनता। पीटी मास्टर के राइट-टर्न, लेफ्ट-टर्न के आदेश पर वह और साथी बच्चे एकसाथ कदम मिलाकर तेज़ ठक-ठक करते। यह अनुशासन, एकजुटता और संयम का अनुभव उसे बड़ा और जिम्मेदार महसूस कराता था। इस वेश-भूषा और अनुशासन का असर था कि लेखक स्वयं को विद्यार्थी नहीं, बल्कि देश की रक्षा करनेवाला फौजी जवान मानने लगता—एक तरह की गौरव, जिम्मेदारी और आत्मविश्वास उसे इस हरकत में मिलता।

5. हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

पीटी मास्टर ने बच्चों से फारसी के शब्द रूप याद करने को कहा, बच्चे नहीं पढ़ पाए तो उन्होंने पूरे वर्ग को मुर्गा बना दिया। बच्चे दर्द और थकावट के कारण मुर्गा बने-बने ही गिरने लगे, यह अमानवीयता हेडमास्टर शर्मा जी से सहन नहीं हुआ। वे संवेदनशील थे; बच्चों की इस स्थिति को देखकर वे नाराज हुए और पीटी मास्टर को तुरंत मुअत्तल (नौकरी से निलंबित) कर दिया। इससे पाठ में यह भी दिखाया गया कि अनुशासन के नाम पर बच्चों को शारीरिक दंड देना अनुचित है और संवेदनशील प्रशासन इसकी अनुमति नहीं देता।

6. स्कूल जाना कब और क्यों अच्छा लगने लगा?

अधिकतर समय स्कूल जाना लेखक के लिए सज़ा के समान था, लेकिन जब पीटी मास्टर बच्चों को स्काउट परेड के साथ झंडियाँ देते, रंगीन झंडियों की रिहर्सल होती, खाकी वर्दी-पॉलिश किए जूते मिलते—तब लेखक को गर्व, उत्साह और अलग-सा आनंद महसूस होता। उस समय स्कूल जाना रूचिकर, विशेष और गौरवपूर्ण लगता था।

7. छुट्टियों का काम पूरा करने की योजनाएँ व 'ओमा' की तरह बहादुर बनने की कल्पना:

लेखक छुट्टियों में मिले गणित के सैकड़ों सवालों को बाँटकर करने की योजनाएं बनाता—'दस सवाल प्रतिदिन हल करूंगा, 20 दिन में खत्म' आदि। लेकिन वह योजनाएं अभ्यास, खेल, आलस्य में छुट्टियाँ निकल जाने के कारण बेकार जातीं। काम अधूरा रह जाता, पिटाई का डर सताता, तब लेखक सोचता कि काम अधूरा रहने पर भी वह 'ओमा' जैसे बहादुर बच्चों की तरह मास्टर के डाँट को झेल लेगा।

8. पीटी साहब की चारित्रिक विशेषताएँ:

वे दुबले-पतले, ठिगने कद के, तेज़, गहरी आँखों और अनुशासनप्रिय थे। वे बच्चों को सख्ती से दंडित करते, डर का माहौल बनाते, लेकिन एक पक्ष उनका ऐसा भी था कि वे सराहना करने और बच्चों के लिए प्रेरणास्रोत बनने की क्षमता रखते थे। स्वाभिमानी थे—नौकरी जाने पर भी गिड़गिड़ाए नहीं।

9. अनुशासन की युक्तियाँ—वर्तमान स्वीकृत मान्यताएँ (सांदर्भिक विचार):

पहले शारीरिक दंड, डाँट, मार-पीट से डराकर अनुशासन बनाया जाता था, पर आजकल बाल-मनोविज्ञान को समझा जाता है। अब बच्चों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए संवाद, प्रोत्साहन, सकारात्मक अनुशासन तथा मित्रवत व्यवहार को महत्व दिया जाता है। मार-पीट और डर उत्पन्न करने वाले दंड अब कानूनी अपराध हैं।

11. अभिभावक खेल-कूद पर रोक लगाते हैं—खेल क्यों ज़रूरी और कब खेलें?:

(क) खेल मानसिक और शारीरिक विकास, सहिष्णुता, सहयोग और प्रतिस्पर्धा की भावना लाते हैं—चरित्र निर्माण में सहायक है।

(ख) समय का संतुलन रखना, पढ़ाई के साथ खेल का संतुलन, समय प्रबंधन और अभिभावकों से संवाद, ताकि वे खेल के लाभ को समझ सकें—ये ज़रूरी हैं।